TEACHER TRANING COLLEGE

03/07 Tuesday — Wk-11/Day (066-299)

C-II Guidance & Counselling

Vocational Service Guidance

शिक्षा को एक उत्तम विनियोग मानते हैं। आज के सन्दर्भ में प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को उत्तम तथा उच्च शिक्षा देना चाहता है। और शिक्षा पर कुछ भी व्यय करने के लिए तत्पर रहता है। इस दिशा में वह प्रयास भी करता है। शिक्षा / प्रशिक्षण द्वारा भावी जीवन की तैयारी होती है। शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त किसी व्यवसाय में स्थान पा लेगा। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के उपरान्त व्यवसाय ढूंढना नहीं पड़ता अपितु उसका स्थानापन्न पाठ्यक्रम में सुनिश्चित हो जाता है इसलिए आज व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु भारी भीड़ है।

1) स्थानापन्न सेवा (Placement Services)
2) अनुगामी सेवा (follow-up Services)
3) शोध सेवा (Research Services)

व्यावसायिक निर्देशन से छात्रों की योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुरूप ही स्थानापन्न के लिए सुझाव तथा निर्देशन दिया जाता है। परन्तु शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में इस बात पर बल दिया जाता है कि छात्र को उपयुक्त व्यवसाय में स्थान दिलाया जाए। किसी व्यवसाय तथा व्यवसाय के प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरान्त स्थान दिलाने की क्रिया है।

Phone/Email/Notes

Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

स्थानापन सेवा
PLACEMENT SERVICE

स्थानापन सेवा का अर्थ होता है कि छात्र को उसकी योग्यताओं, क्षमताओं तथा गुणों के अनुसार उपयुक्त स्थान दिलाया जाये जिससे वह सुगमता से समायोजन करके उसमें सफल हो सके। अनेक विद्वानों ने स्थानापन सेवा की परिभाषा भी की है।

According to clifford. P. forchlich :- सेवा उन सभी क्रियाओं की ओर संकेत करती है जो छात्र को उसकी जीविका हेतु व्यवसाय या रोजगार अथवा शैक्षिक क्रियाओं या शैक्षिक प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए सहायता की जाती है या निर्देशन किया जाता है। जिससे वह उसमें पर्याप्त समायोजन करके सफल हो सके।

अनेक विद्वानों ने स्थापान सेवा की परिभाषा :- 'स्थानापन सेवा का सम्बन्ध छात्र को अगले कार्य या पद के लिए सहायता देना है, चाहे वह किसी व्यवसाय स्थान या पद में सके या शिक्षा संस्था में उपयुक्त पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में स्थान पा सके।'

रूथ तथा विले के अनुसार :- "स्थानापन सेवा उन सभी क्रियाओं की ओर संकेत करती है। जो छात्र को उसकी जीविका हेतु व्यवसाय या रोजगार अथवा शैक्षिक क्रियाओं या शैक्षिक प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए सहायता की जाती है या निर्देशन किया जाता है। जिससे वह पर्याप्त समायोजन करके सफल हो सके।

स्थानापन्न सेवा की आवश्यकता एवं महत्व

स्थानापन्न सेवा की आवश्यकता शैक्षिक तथा व्यावसायिक दोनों प्रकार के निर्देशन में है। यहाँ स्थानापन्न सेवा की आवश्यकता एवं महत्व को बताया गया है।

1) स्थानापन्न सेवा से छात्र बोध हो जाता है कि उसकी योग्यताओं एवं क्षमताएं किस कार्य के लिए उपयुक्त है। जिनमें वह अधिक सफल हो सकेगा और पर्याप्त समायोजन भी कर सकेगा।

2) छात्र को विद्यालय में उन्हीं विषयों का अध्ययन करना चाहिए। तथा तैयारी करनी चाहिए जो उसके भावी कार्यक्रम में सहायक हो।

3) स्थानापन्न सेवा से व्यावसायिक तथा शैक्षिक कार्य-प्रणाली सम्बन्धी समायोजन की समस्याओं को कम किया जा सकता है।

4) स्थानापन्न सेवा समाज को भी प्रभावित करती है जब छात्रों को नियुक्ति संतोषप्रद होती है तो उसका समाज के आर्थिक पक्ष पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उचित जीविका में प्रवेश करने पर समाज की आय में वृद्धि होती है। अपनी रूचि एवं योग्यतानुसार जीविका प्राप्त होने पर उसका समायोजन सन्तोषजनक होता है। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य में अधिक प्रवीण भी होते हैं। जिनका उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है।

Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

5) स्थानापन सेवाएं विद्यालय का सम्मान समाज में बढ़ाती हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यालय छोड़ने के बाद उसके छात्र क्या करते हैं। किस प्रकार की जीविकाओं में नियोजित करते हैं, उनकी प्रगति भी शीघ्रता से होती है। तीव्र प्रगति करने वाले छात्र विद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं।

6) विद्यालयों की स्थानापन सेवाओं से नियोक्ताओं को भी लाभ रहता है। विभिन्न जीविकाओं में स्थान रिक्त होने पर नियोक्ता भी योग्य अभ्यर्थी इन सेवाओं के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए सेवा अधिकारी तथा नियुक्तकर्ता का परस्पर सहयोग आवश्यक है।

7) स्थानापन सेवा द्वारा प्रबन्धन व्यवस्था को प्रभावशाली बनाया जाता है। ऐसे छात्रों एवं व्यक्तियों की नियुक्तियाँ की जाती हैं जो वास्तव में उस स्थान के अधिक उपयुक्त हैं। जब व्यक्ति को रोजगार से संतुष्टि नहीं होती है तब वह संस्था में समस्याएं उत्पन्न करता है।

8) भिन्न-भिन्न संस्थाओं में कार्यकर्ताओं की माँग एवं पूर्ति में सन्तुलन रखने की दृष्टि से स्थानापन सेवा का विशेष महत्व है।

9) महत्वपूर्ण अध्ययनों तथा शोध कार्यों को बढ़ावा देने की दृष्टि से स्थानापन सेवाओं का अधिक महत्व है क्योंकि स्थानापन सेवाओं की प्रभावशीलता का आकलन अनुगामी कार्यक्रमों से करना आवश्यक होता है।

Phone/Email/Notes
13 20 27
14 21 28
15 22 29
16 23 30
17 24 31
18 25
19 26

10) नवयुवक छात्र रोजगार के ढूंढने में अधिक कठिनाई का अनुभव करते हैं। आजकल ऐसी ही परिस्थितियाँ भारत में के बहुत अधिकांश समाज पर उचित ही जीविका में प्रवेश प्राप्त नहीं कर पाते हैं। स्थानापन्न सेवा इन जीविकाओं के कार्य में बताती है। जिनमें उचित स्थान होते हैं।

स्थानापन्न सेवा के प्रकार –
साधारणतः स्थानापन्न सेवाएँ तीन प्रकार की होती हैं।
1) शैक्षिक स्थानापन्न
2) व्यवसायिक स्थानापन्न
3) प्रशिक्षण स्थानापन्न

जॉर्ज ई० मायर्स का विचार है कि छात्र को किसी व्यवसाय में स्थान दिलाने का उत्तरदायित्व विद्यालय का ही है। जैसा उनका कथना है,

एक नवयुवक को विद्यालय से व्यवसायिक क्रियाओं में भेजना शैक्षिक संस्था विद्यालय का ही यह एक मुख्य कार्य है।

जॉन डीवी के अनुसार :- छात्र में सामाजिक तथा व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। जिससे वह समाज में अपना स्थान बना सके। इसे उन्होंने सामाजिक प्रभावशीलता का विकास माना है।

2. व्यावसायिक स्थापना सेवा

छात्र को उसकी योग्यताओं, अभिरुचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त व्यवसाय या रोजगार में उचित स्थान दिलाने में सहायता देने की क्रियाओं को व्यावसायिक स्थापना सेवा कहते हैं।

मायर्स ने अपनी पुस्तक में यह उत्तरदायित्व विद्यालय का ही बतलाया है कि छात्र को शिक्षा देने के उपरान्त उसे उपयुक्त रोजगार में स्थान दिलाने का कार्य विद्यालय को ही करना चाहिए। इसके प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं।

अ) स्थापना सेवा सभी के सहयोग से की जानी चाहिए, जिसमें अध्यापक, निर्देशन परामर्शदाता, प्राचार्य तथा अन्य संस्थाएँ प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसायों के कर्मचारी भी सहयोग कर सकते हैं।

1) व्यावसायिक कार्यों का अभिविन्यास, प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन करना।

2.) विभिन्न व्यवसायों तथा अवसरों की छात्र को जानकारी देना।

3) छात्रों की योग्यताओं एवं क्षमताओं से रोजगार के लिए आवश्यक क्रियाओं तथा कौशलों से मिलान करना।

4) छात्र को पूर्ण जानकारी देने के बाद, व्यवसाय का चुनाव वह स्वयं करना चाहिए।

5) स्थापना के पश्चात आकलन के लिए अनुगामी क्रियाओं का उपयोग करना चाहिए। रोजगार से संतुष्टि का भी पता लगाना चाहिए।

Phone/Email/Notes
Notes
ARCH
6 13 20 27
7 14 21 28
1 8 15 22 29
2 9 16 23 30
3 10 17 24 31
4 11 18 25
5 12 19 26
Scanned with CamScanner